परिचय

I. बाइबल में दिए इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक क्यों है?

यह प्रश्न उपयुक्त है। सेवकाई करने वाले से बाइबल का अध्ययन करने की *अपेक्षा* की जाती है। उसके लिए स्वयं इसे जानना और दूसरों को सिखाना आवश्यक है। मसीही से अपने सुधार के लिए बाइबल पढ़ने के लिए कहा जाता है। लेकिन किसी बाइबल कॉलेज के पाठ्यक्रम में बाइबल के इतिहास को योजनाबद्ध ढंग से कोर्स में शामिल करना क्यों आवश्यक है?

1. क्योंकि बाइबल को इतने अधिक लोग जानते हैं। – हर मसीही घर में बाइबल की कहानियां पढ़ी और सुनाई जाती हैं। कलीसिया में इसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, होटल में, न्यायालय में और विधान भवन में इसे सम्मान से रखा जाता है। इसे हमारे अति आधुनिक साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता और तीन सौ भाषाओं व उपभाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।[1] प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में संसार की किसी भी दूसरी पुस्तक से इसकी दस गुणा अधिक पुस्तकें तैयार होती हैं। *ऐसी* पुस्तक को, जिसे इतने अधिक लोग पढ़ते हैं, जो इतनी रचनात्मक है, उदारवादी समाज की हर योजना में शामिल किया जाना आवश्यक है।

2. क्योंकि इतने कम लोगों को इसका ज्ञान है। – लोग बाइबल को पढ़ने के बजाय इसके बारे में अधिक पढ़ते हैं। वे इसका अध्ययन करने के बजाय इसे केवल पढ़ते ही हैं। इसके बारे में उनका ज्ञान अंधविश्वास से भरा और अधूरा है। इससे *जुड़ा* उनका कोई भी विचार स्पष्ट नहीं है। स्कूलों, कॉलेजों में छात्रों को मिसर और फारस, यूनान और रोम के इतिहास की शिक्षा दी जाती है। बाइबल कॉलेज से स्नातक की उपाधि लेने वाले कितने लोग इब्राहीम या मूसा या दाऊद या यीशु या पौलुस के जीवन की दर्जनभर से अधिक बातें क्रमानुसार बता सकते हैं?

3. क्योंकि बाइबल की योजना ऐतिहासिक है। – यह कोई तर्कशास्त्र या विज्ञान की पुस्तक नहीं है। मनुष्य के छुटकारे की बात इसके पन्नों पर इतिहास की एक घटना के रूप में दिखाई गई है। इसका अध्ययन ऐतिहासिक पुस्तक के रूप में करना चाहिए। बाइबल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, इसकी आयत, तथ्य, पात्र से अवश्य ही कुछ भला मिल सकता है! यदि इसके साथ सम्बन्धों को जोड़ दिया जाए तो यह कितना अच्छा होगा! अपने सामने कला का एक बेहतरीन नमूना रखे जाने की कल्पना करें कि हम उसकी प्रशंसा करें; उसमें एक झाड़ी यहां है, एक चट्टान वहां है, और नीले आकाश का टुकड़ा लगाया गया है

या उसके पीछे एक तालाब दिखाया गया है! बेशक इनमें से हर एक का अपना महत्व है, फिर भी लोग कला की शानदार रचनाओं का अध्ययन नहीं करते; न ही वे आत्मा के शानदार प्रकाशनों का अध्ययन करेंगे। मैगना कर्ज़ा (1215 में इंग्लैण्ड के राजा जॉन से प्राप्त महाधिकार पत्र), लूथर के थीसिस और अब्राहाम लिंकन का चरित्र अपने आप में अध्ययन के योग्य होंगे; या यूं कहें कि इतिहास के परिप्रेक्ष्य से, ये सबसे अधिक दिलचस्प विषय हैं। अब्राहाम या मूसा, दाऊद या पौलुस को जानना हो, तो इब्राहीम की वाचा, सीनै और कलवरी के दृश्यों या पिन्तेकुस्त के दिन दिए गए संदेश को अच्छी तरह से समझना आवश्यक है, उन्हें पूर्ण के एक भाग के रूप में जानना आवश्यक है। बाइबल का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।

4. इसकी एकता को महसूस करना। – बाइबल केवल एक किताब ही नहीं बल्कि इसमें बहुत सी पुस्तकें हैं। इसके चालीस लेखक अलग-अलग समय में अलग-अलग स्थान पर रहते थे। उनमें समाज के हर क्षेत्र से अर्थात चरवाहे से लेकर मछुआरे और दरबारी कवियों से लेकर अनुशासित विद्वानों तक शामिल थे। इसका संकलन भी उच्च स्तर का है अर्थात इतिहास, व्यवस्था, कविता, वीरगाथा और संगीत, लोकोक्तियां, भविष्यवाणी, दृष्टांत, भाषण, पत्री, प्रवचन, सब इन अद्‌भुत पृष्ठों में मिलते हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि इन चालीस लेखकों में से अधिकतर एक दूसरे को बिल्कुल नहीं जानते थे। फिर भी यह एक किताब है। चालीस लेखकों ने बिना जाने, लेकिन वास्तव में आत्मा की एकता और उद्देश्य के साथ लिखा। ईश्वरीय उद्देश्य का बेजोड़ धागा, ईश्वरीय बलिदान से मनुष्य के छुटकारे की लाल डोरी छयासठ पुस्तिकाओं से होती हुई उन्हें एक कतार में बांधती है। समय-समय पर थोड़ा-थोड़ा करके, वह उद्देश्य प्रकट होता है; ''पहले पज़ी, फिर कोपल और फिर कोपल में भरे दाने।'' तस्वीर में मुज़्य आकर्षण मसीह है। छिन गए स्वर्गलोक से आगे की ओर हों या स्वर्गलोक मिल जाने वाला ही हो, उसके सिर पर से विभिन्न दिशाओं में रेखाएं बनती हैं। मसीह कुंजी है; उसके बिना *अव्यवस्था* (*chaos*) है; उसके साथ *संसार* (*kosmos*) अर्थात सुन्दरता, व्यवस्था, एकता है।

5. मानवीय इतिहास की पुस्तक के रूप में। – अपने ही इतिहास को न जानने वाला अपने बारे में कुछ भी दावा नहीं कर सकता। शूरवीरता या मूर्खता के अच्छे सबक, संसार के समृद्ध साहित्य के इतिहास से ही मिलते हैं। बाइबल संसार की सबसे श्रेष्ठ जातियों में से एक इब्रानियों के मूल और भविष्य के बारे में पूरी तरह से खोलकर बताती है। *उनके* इतिहास का धागा पुराने ज़माने की हर जाति से जुड़ा हुआ है। इसीलिए कसदिया, मिसर, अश्शूर, बेबिलोन, फारस, मेसिडोनिया (मकिदुनिया) और रोम सबका एक-एक कर थोड़ा बहुत वर्णन किया गया है।

6. बाइबल में किसी विश्वास की रक्षा करना। – हमारे मन में बच्चों जैसे हज़ारों विचार आते हैं। कई साल बाहर रहने के बाद हम अपने बचपन के घर में लौटते हैं। सब कुछ कैसे बदल गया है! वह पुराना घर और खलिहान, वह खेत जिसमें हम खेलते थे, वह तराई जहां हम घूमते थे, वह किनारा जहां हम नहाते थे, मछलियां पकड़ते या फिसलते थे,

सब कुछ बदल गया है। हमारी सोच और शरीर बड़ा हो गया है। बचपन के विचारों के साथ-साथ अपने पिता की बाइबल में हमारे विश्वास खोने का खतरा बढ़ गया है। यह खतरा इसके बारे में हमारी अज्ञानता है। इसलिए इसका अच्छा समाधान, इसे अच्छी तरह से जानना है।

II. बाइबल इतिहास का उद्देश्य

बाइबल के इतिहास का मुज़्य उद्देश्य धार्मिक ही है। सज़्पूर्ण इतिहास में धर्म ही प्रमुख है। यह इतिहास कला, कविता, व्यवस्था, परज़्पराओं, पारिवारिक जीवन, यहां तक कि बड़े-बड़े युद्धों से भी सज़्बन्धित है। फिर भी, नियम के रूप में, इसे संयोग या गौण माना जाता है। राजनीतिक और बौद्धिक जीवन में बड़े-बड़े साम्राज्यों या भवन निर्माण के भव्य स्मारक बनाने, कला या व्यवस्था या साहित्य की श्रेष्ठतर रचना करने को ही प्राथमिकता दी जाती है।

इसके विपरीत बाइबल इतिहास में, धार्मिक उद्देश्य प्रमुख है। यह सही है कि अपनी पहली से आखिरी अद्भुत कहानी तक, परमेश्वर के चुने हुए लोग प्राचीन समय की प्रत्येक बड़ी जाति के सज़्पर्क में आए। हमें *उनके* सज़ा में आने के लिए उठाए गए कुछ कदमों और उनके पतन के कुछ कारणों का पता चलता है। फिर भी, बाइबल में, सामान्य इतिहास की बात संयोग मात्र ही है। *मुज़्य उद्देश्य* सच्चे धर्म के ऐतिहासिक विकास के तीन बड़े चरणों अर्थात पुरखाओं के, यहूदी और मसीही चरणों के *मूल* के बारे में जानना है। ऐतिहासिक धर्म को न मानने वाला भी इसकी धारणा के बिना नहीं रह सकता।

III. बाइबल इतिहास के काल

तीन बड़ी घटनाएं बाइबल के इतिहास को तीन बड़े कालों या युगों में बांटती हैं। वे हैं: (1) सीनै पर्वत पर मूसा को व्यवस्था देना; (2) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का उतरना; (3) अंतिम प्रेरित की मृत्यु। इन कालखंडों को इस प्रकार समझाया जा सकता है:

1. पुरखाओं का काल,[2] 4004-1491 ई.पू.। सृष्टि की रचना से व्यवस्था दिए जाने तक।
2. यहूदी काल, 1491 ई.पू.-30 ई.। व्यवस्था दिए जाने से पवित्र आत्मा के उतरने तक।
3. मसीही काल, 30 ई.-100 ई.। आत्मा के उतरने से प्रेरित यूहन्ना की मृत्यु तक।

प्रथम युग की विशेष बात परिवार, अर्थात परिवार को मिलने वाला प्रकाशन, परिवार का धर्म, परिवार का प्रबन्ध है; दूसरे की विशेष बात, कौमी या राष्ट्रीय धर्म, कौमी वाचा और तीसरे की जाति अर्थात विश्वव्यापी धर्म और संदेश है। प्रथम युग में परमेश्वर पुरखाओं के द्वारा परिवार के लोगों से बात करता था; दूसरे में उसने मूसा के द्वारा कौम के साथ बात की; तीसरे में वह अपने पुत्र के द्वारा सारे संसार से बात करता है।

IV. पुराने नियम के इतिहास के काल

इतिहास की घटनाओं को उचित परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए, *इतिहास की महत्वपूर्ण बातों* और उनकी तिथियों को याद रखना आवश्यक है। नीचे दिए गए कालों को अच्छी तरह से समझने के लिए, प्रत्येक घटना का हवाला उसके उचित काल के अनुसार देने के लिए, निम्न कालों को समझने के लिए एक घंटा लगाना जीवन भर के लिए उपयोगी होगा:

1. जल प्रलय से पहले का काल, 4004–2348 ई.पू.। सृष्टि की रचना से लेकर जल प्रलय तक।
2. जल प्रलय के बाद का काल, 2348–1921 ई.पू.। जल प्रलय से इब्राहीम के बुलाए जाने तक।
3. पुरखाओं का युग, 1921–1706 ई.पू.। इब्राहीम के बुलाए जाने से मिसर में जाने तक।
4. दासता, 1706–1491 ई.पू.। मिसर में जाने से बाहर निकलने तक।
5. जंगल में, 1491–1451 ई.पू.। मिसर से जाने से यरदन पार जाने तक।
6. विजय, 1451–1400 ई.पू.। यरदन पार जाने से यहोशू की मृत्यु तक।
7. न्यायी, 1400–1095 ई.पू.। यहोशू की मृत्यु से शाऊल के अभिषेक तक।
8. संयुज्त राज्य, 1095–975 ई.पू.। शाऊल के अभिषेक से रहूबियाम के उदय तक।
9. दोहरा राज्य, 975–722 ई.पू.। रहूबियाम के उदय से सामरिया के पतन तक।
10. यहूदा अकेला, 722–586 ई.पू.। सामरिया के पतन से यरूशलेम के विश्वास से गिरने तक।
11. निर्वासन, 586–536 ई.पू.। यरूशलेम के गिरने से ज़रूज़्बाबेल के अधीन होने तक।
12. निर्वासन के बाद का समय, 536–400 ई.पू.। वापसी से पुराने नियम की अंतिम पुस्तक तक।

पाद टिप्पणियां

[1]यह आंकड़ा 1921 के अनुवाद के विकास को दिखाता है। [2]बाइबल का प्रारज़्भिक कालक्रम बहुत अनिश्चित है। चर्च बिल्डिंग में आराधना के लिए आने वालों को बिठाने वाले के काम की तरह, हमारी (कई) बाइबलों में छोड़े गए किनारों में किसी स्वीकृत प्रबन्ध की जगह यहां छोड़ी गई है। निर्गमन का समय सौ-डेढ़ सौ साल बाद हुआ होगा।